ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-8* September- 2017
Innovation The Research Concept

भारतीय संस्कृत साहित्य में मालवा का ऐतिहासिक भूगोल (वैदिक काल से 7वीं–8वीं शताब्दी तक)

सारांश

साहित्य में उपलब्ध सांस्कृतिक ऐतिहासिक भूगोल से सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान भारतीय इतिहास के अध्ययन में एक मूलभूत आवश्यकता है। मालवा क्षेत्र (मध्य प्रदेश) प्रागैतिहासिक युग से लेकर ऐतिहासिक युग तक की संस्कृतियों को संजोए है। इस क्षेत्र के वैभवशाली इतिहास का परिज्ञान साहित्यों द्वारा सम्भव है। मैंने वैदिक काल से 7वीं–8वीं शताब्दी तक के साहित्यों में उल्लिखित मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के सांस्कृतिक अध्ययन को प्रस्तुत करने का प्रयास, प्रस्तुत शोध में किया है। वैदिक ग्रंथों एवं रामायण में मालवा से सम्बन्धित सूचना अत्यल्प है। महाभारत में उज्जयिनी एक महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र के रूप में वर्णित हैं। पुराणों में हमें मालवा से सम्बन्धित प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है। चौथी से सातवीं शताब्दी ई0 का काव्य संस्कृत साहित्य के चहुँमुखी विकास का काल माना जाता है। कुछ रचनाकार जैसे वात्स्यायन, भास, कालिदास, शूद्रक, भारवि, वराहमिहिर एवं बाणभट्ट की रचनाएँ विशुद्ध रूप से साहित्यिक ग्रंथ होते हुए भी इतिहास के लिए प्रचुर सामग्री प्रदान करती है, और इन सभी का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में मालवा से अवश्य रहा है। अतः उपर्युक्त साहित्यों में प्राप्त मालवा से सम्बन्धित विभिन्न नगरों, नदियाँ, पर्वत, धार्मिकस्थल, तीर्थस्थल एवं यात्रा–पथ का अभिज्ञान तथा उनके सांस्कृतिक महत्व को उद्‌घाटित किया गया है।

मुख्य शब्द : ऐतिहासिक भूगोल, संस्कृत साहित्य, मालवा क्षेत्र, उज्जयिनी नगर, अवन्ति, महाकाल, मेघदूत।

रागिनी राय
पोस्ट डॉक्टोरलफेलो,
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

प्रस्तावना

ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन का प्रारम्भ 18वीं शताब्दी में यूरोप में प्रारम्भ हुआ था। आधुनिक भारत में ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन का श्रीगणेश भारतीय पुरातत्व के जनक अलेक्जेंडर कनिंघम ने श्वान–च्वाँग के यात्रा विवरण के आधार पर 'ऐंशिएण्ट ज्यॉग्रफी ऑफ इण्डिया' (1871) नामक ग्रंथ लिखकर किया। तत्पश्चात् 'जान पोश', एच0सी0 राय चौधरी, नन्दूलाल डे आदि अनेक विद्वानों ने ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययनक्रम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण आधुनिक मध्य प्रदेश की सीमा के अंतर्गत आने वाले मालवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह प्रदेश उत्तरी अक्षांश 21^{0}.70–25^{0}.10 तथा पूर्वी देशान्तर 73^{0}.45–79^{0}.14 के मध्य स्थित है। अनेक नदियों से अभिसिंचित इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक युग से लेकर ऐतिहासिक युग तक की संस्कृतियों का परिज्ञान सम्भव है। इस क्षेत्र के वैभवशाली इतिहास एवं वैशिष्ट्य ने मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए अभिलषित बनाया।

अध्ययन का उद्देश्य

मालवा के ऐतिहासिक भूगोल पर अभी तक कोई सर्वांगींण गम्भीर कार्य नहीं हुआ है। इस कमी ने शोध–अध्येता के मानसिक धरातल पर उत्प्रेरक किरणों का प्रस्फुटन किया ताकि अधीतकालीन ऐतिहासिक भूगोल की सांस्कृतिक जानकारी विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत हो सके। मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए अनेकानेक साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध हैं। अधीतकालीन साहित्यों में अनेकानेक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सामग्री प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है। इन साहित्यिक प्रमाणों के विश्लेषण से बहुधा नूतन सूचनायें उपलब्ध होती हैं जो ऐतिहासिक भूगोल की सूचनाओं की अभिवृद्धि में अमूल्य सहायता प्रदान करते हैं। अतः साहित्यों में प्राप्त मालवा से सम्बन्धित स्थानों और भौगोलिक इकाइयों का अभिज्ञान तथा उनके सांस्कृतिक महत्व को उद्‌घाटित करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य

है।

प्राचीन मालवा प्रशासनिक दृष्टि से दो भागों में विभक्त था, जिन्हें 'पूर्वी मालवा' तथा 'पश्चिमी मालवा' के नाम से जाना जाता था। पूर्वी मालवा की राजधानी भिलसा के समीप स्थित बेसनगर (विदिशा) तथा पश्चिमी मालवा की राजधानी उज्जैन थी।[1] मालव जाति से सम्बन्धित औलिकर वंश के लोग गुप्तों के अधीन दशपुर (पश्चिमी मालवा) में शासन किया। यह बहुत सम्भव है कि 'अवन्ति' और 'आकर' क्षेत्र का मालवा के नाम से अभिहित किये जाने के लिए औलिकर शासक उत्तरदायी रहे हों।[2] दूसरी शताब्दी ई0 तक इसे अवन्ति कहा जाता था, किन्तु सातवीं–आठवीं शताब्दी ई0 के पश्चात् इसे मालवा कहा जाने लगा।[3] इस प्रकार विदिशा से उज्जयिनी तक मालवा जनपद का विस्तार था और मालवा प्रदेश का प्राचीन नाम अवन्ति जनपद था।[4] अतः अधिकांश विद्वानों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि मालवा का प्राचीन नाम अवन्ति था और उसकी राजधानी उज्जैन थी।[5]

वेदों में मालवा से सम्बन्धित सूचना अत्यल्प है।[6] रामायण के अनुसार रामचन्द्र ने विदिशा नगर को शत्रुघ्न को दिया था।[7] महाभारत[8] में उज्जयिनी एक महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र के रूप में वर्णित है। यहाँ गुरु संदीपनी के आश्रम में श्रीकृष्ण एवं बलराम शिक्षा ग्रहण करते थे। उज्जयिनी उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात था। सुदूर–स्थलों से विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। वेद, धर्मशास्त्र, धर्मदर्शन और नीतिशास्त्र शिक्षा के मुख्य विषय थे। महाभारत में ही विदिशा नगर का उल्लेख सर्वप्रथम प्राप्त होता है।[9]

'पुराणों'[10] में मालवा से सम्बन्धित स्थलों के बारे में हमें प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है। पुराणों से हमें मालवा के नागवंश[11] और हैहयवंश[12] के बारे में सूचना मिलती है। ये पूर्णरूप से विश्वसनीय तो नहीं कहे जा सकते, लेकिन अन्य साक्ष्यों की पूरक सामग्री के रूप में इनका प्रयोग किया जा सकता है। 'वायुपुराण'[13] में विदिशा का उल्लेख विदिशा नदी (आधुनिक बेस नदी) तथा वेत्रवती (आधुनिक बेतवा) के सम्बन्ध में हुआ है। ये दोनों नदियाँ पारियात्र पर्वत से निकलती थीं। इनसे मिलने वाली अन्य नदियाँ परा, चर्मण्वती (चम्बल) तथा शिप्रा थीं, जिनका उल्लेख पुराणों में हुआ है। 'ब्रह्माण्डपुराण' में भी विदिशा तथा वेत्रवती नदियों के नाम का उल्लेख वर्णाशा, नन्दना, सदानीरा, महानदी, पाशा तथा चर्मण्वती के साथ हुआ है।[14] सम्भवतः विदिशा नदी के नाम की उत्पत्ति का सम्बन्ध विदिशा नगर के साथ था। विष्णुपुराण[15], अग्निपुराण[16], भागवतपुराण[17] में अवन्ति की चर्चा मिलती है। मत्स्यपुराण[18], नरसिंहपुराण तथा स्कन्दपुराण में उज्जैन के पवित्र तीर्थों का उल्लेख मिलता है। सम्भवतः कुछ पुराणकारों ने उज्जयिनी में रहते हुए पुराणों को नया रूप प्रदान किया।[19]

'स्कन्दपुराण'[20] का छठा खण्ड 'आवन्त्यखण्ड' नाम से जाना जाता है। इस खण्ड में अवन्ति या उज्जैन स्थित 84 विभिन्न शिवलिंगों के माहात्म्य एवं उत्पत्ति का वर्णन किया गया है तथा महाकालेश्वर का विस्तारपूर्वक वर्णन है। तीसरे खण्ड 'ब्रह्मखण्ड' के द्वितीय अध्याय में उज्जयिनी के महाकाल की प्रतिष्ठा एवं पूजन–विधि का वर्णन है। स्कन्दपुराण में विदिशा (दशार्ण क्षेत्र) को तीर्थ कहा गया है।[21] स्कन्दपुराण के अनुसार, देवी विन्ध्यवासिनी अवन्ति में निवास करती थीं।[22] उज्जैन एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ के रूप में जाना जाता था। इस प्रकार यह क्षेत्र शाक्त और भैरव दोनों का केन्द्र बिन्दु था।

ब्रह्मपुराण[23] में भी अवन्ति का उल्लेख प्राप्त होता है। इसमें उज्जयिनी को महापुरी कहा गया है। इसके लेखक ने इस नगर के प्राकार, तोरण, अर्गलाद्वार तथा परिखा का उल्लेख किया है। इसके अनुसार नगर के भीतर रम्य, चत्वर, सुन्दर राजमार्ग तथा वीथियाँ सुशोभित थी। इसके बाजारों में वणिकों की दुकानें थी जिनमें विविध भाण्ड विक्रय के निमित्त केन्द्रित किये गये थे।[24] सड़कों के दोनों ओर प्रासादों का निर्माण किया गया था, जिसके कारण पुर की शोभा अन्वेक्षणीय थी। नागरिक गीत वाद्य तथा गोष्ठी आदि के द्वारा अपना मनोविनोद किया करते थे। यहाँ के सरोवरों में हंस, कारण्डव, चक्रवाक, सारस एवं वलाक आदि पक्षी तथा कुमुद एवं उत्पल आदि विभिन्न पुष्प सुशोभित थे।[25] इस पुर की ललनायें गुणाढ्य, सम्पूर्ण अलंकारों से विभूषित, प्रियदर्शना, विदग्धा, रूप एवं लावण्य आदि से संयुक्त नृत्य एवं गीत आदि में प्रवीण तथा कथा एवं आलाप में परम दक्ष थीं।[26]

'ब्रह्मपुराण' में उज्जयिनी की गणना भारत की सात मोक्षदायिका पुरियों में की गयी है। यहाँ पर प्रधान रूप से शिव की पूजा महाकाल के नाम से होती थी। लोगों का विश्वास था कि सम्पूर्ण कामों को पूर्ण करने वाले महाकाल त्रिलोचन शिव इस नगर की रक्षा करते हैं।[27] इस प्रकार उज्जयिनी में महाकाल के प्रसिद्ध मंदिर की प्रदक्षिणा का एक बहुत बड़ा भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभ माना जाता था। इस देवालय में नृत्य, स्त्रोत, गीत तथा वाद्य का आयोजन किया जाता था तथा नैवेद्य एवं उपहार इत्यादि विधिवत् चढ़ाये जाते थे।[28]

ब्रह्मपुराण में न केवल देवालय अपितु शिवकुण्ड नामक एक जलकुण्ड एवं 'शिप्रा' नदी का भी वर्णन है। 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार, 'शिवकुण्ड' में सम्पूर्ण पापों के प्रक्षालन के निमित्त लोग स्नान करते थे तथा उसके उपरान्त देवताओं तथा ऋषियों एवं पितरों का विधिपूर्वक तर्पण करते थे। शिप्रा नदी के जल को लोग बहुत पवित्र मानते थे। लोगों की यह धारणा थी कि इसमें स्नान करने से मनुष्य सम्पूर्ण पापों से विमुक्त हो जाता है तथा उसे स्वर्गलोक में विविध भागों की प्राप्ति होती है।[29]

'गरुड़पुराण' के अनुसार विदिशा नगर की छटा अन्वेक्षणीय (शोभाढ्यम) थी। यह विविध बहुमूल्य धातुओं से सम्पन्न था (नानारत्न समाकुलम्) तथा इसमें विविध प्रदेशों के निवासी रहते थे। यह नगर धर्म का प्रधान केन्द्र था। इसके नागरिक ऐश्वर्य एवं विलास की सामग्री से सम्पन्न थे।[30]'मार्कण्डेयपुराण' में दशार्ण देश के नाम की उत्पत्ति का आधार इस नाम की एक नदी

को बताया गया है जो कि इसके बीच होकर बहती थी।[31] दशार्ण नदी की पहचान आधुनिक धसान नामक नदी से की जाती है जो कि वेत्रवती की एक सहायक नदी है। इस प्रकार पुराणों में मालवा से सम्बन्धित अनेकानेक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सामग्री प्राप्त होती है।

'महाभाष्य' के रचयिता पतंजलि का परम्परागत जनम स्थान गोनर्द[32] माना जाता है। महाभाष्य[33] पाणिनिकृत अष्टाध्यायी की व्याख्या है। इसमें कुल 85 **आह्निक** (अध्याय) हैं। यह ग्रंथ मूलतः एक व्याकरणशास्त्र है, किन्तु इसमें द्वितीय शताब्दी ई0पू0 के भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के बारे में भी पर्याप्त सूचना मिलती है। महाभाष्य के वर्णन से पता चलता है कि पुण्यमित्र शुंग ने किसी ऐसे विशाल यज्ञ का आयोजन किया था जिसमें अनेक पुरोहित थे और उनमें एक पतंजलि भी थे। एक यवन द्वारा जिसको अधिक ग्राह्यरूपेण ग्रीक मेनाण्डर (लगभग 156—153) से अभिन्न कहा जाता है, साकेत और माध्यमिका पर एक आसन्नकालीन आक्रमण का उल्लेख है।[34] इन तिथियों से महाभाष्य की रचना के लिए लगभग 150—49 (ई0पू0) का समय इस संभाव्य कल्पना के आधार पर प्राप्त होता है कि उक्त उल्लेख स्वयं पतंजलि के ही हैं।

चौथी शताब्दी से सातवीं शताब्दी ईसवी का काल संस्कृत साहित्य के चहुँमुखी विकास का काल माना जाता है। कुछ रचनाकार जैसे 'वात्स्यायन', 'कालिदास', 'शूद्रक', 'भारवि', 'वराहमिहिर' एवं 'बाण' की रचनायें विशुद्ध रूप से साहित्यिक ग्रंथ होते हुए भी इतिहास के लिए प्रचुर सामग्री प्रदान करती है और इन सभी का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में उज्जयिनी से अवश्य रहा है।

'कालिदास'[35] एवं 'बाणभट्ट' दोनों ने 'भास'[36] का उल्लेख किया है, इसलिए साधारणतया इन्हें कालिदास के पूर्व का माना जाता है (लगभग 300 ई0)। भासकृत 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण'[37], 'स्वप्नवासवदत्ता'[38], और चारूदत्त[39] आदि नाटकों में उज्जयिनी तथा उज्जयिनी स्थित विभिन्न स्थलों जैसे महलों, बगीचों, झीलों एवं भौतिक सुख—दुःख का वर्णन मिलता है। इस प्रकार भास के नाटक तत्कालीन मालवा की समस्त सांस्कृतिक झाँकी प्रस्तुत करते हैं।

'शूद्रक कृत' 'मृच्छकटिक'[40](5वीं शताब्दी) की घटनाओं का स्थान **उज्जयिनी** है। मृच्छकटिक संस्कृत का सुप्रसिद्ध यथार्थवादी नाटक है। इसमें चारूदत्त एवं बसंतसेना नाम्नी वेश्या का प्रणय—प्रसंग दस अंकों में वर्णित है। शूद्रक ने मृच्छकटिक नाटक का प्रारम्भ शिव—स्तुति से किया है, जो उज्जयिनी में शैव धर्म के प्रचार का द्योतक है।[41] इसके वर्णन से यह ज्ञात होता है कि गुप्तों के समय में उज्जयिनी अत्यन्त समृद्धशाली थी। मृच्छकटिक के अनुसार इस पुर में विविध विहार, आराम, देवालय, सरोवर, कूप तथा यज्ञयूप थे जिनके कारण इसकी शोभा अन्वेषणीय थी।[42] इस ग्रंथ में उज्जयिनी के नागरिकों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का एक सजीव वर्णन उपलब्ध होता है। इसमें तत्कालीन वर्णव्यवस्था[43], वेश्यावृत्ति[44], दास—प्रथा[45], धार्मिक जीवन[46], विभिन्न कलाओं[47], आर्थिक समृद्धि आदि के वर्णन से हमें विवेच्यकालीन मालवा के **उज्जयिनी नगर** के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की स्पष्ट रूपरेखा मिलती है। नगरवेश्या बसंतसेना के भव्य प्रासाद का जो विवरण ग्रंथकार ने प्रस्तुत किया है वह बहुत ही मनोरम तथा प्राचीन वास्तु सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाओं से परिपूर्ण है। लेखक ने उस विशाल भवन के बहिर्द्वार, विभिन्न प्रकोष्ठ, संगीतशाला, सोपान, गृहफलक तथा वातायन आदि का मूर्तिमान स्वरूप जिस सफलता के साथ उपस्थित किया है वह परम श्लाघनीय है। शूद्रक के इस ग्रंथ में उज्जयिनी का सांस्कृतिक जीवन उभर कर सामने आया है।

कालिदास के ग्रंथों[48] में मालवा से सम्बन्धित नगरों का प्रचुर उल्लेख मिलता है। 'रघुवंश' में वर्णन मिलता है कि शत्रुघ्न के दो पुत्र थे— शत्रुघातिन और सुबाहु। उन्होंने शत्रुघातिन को मथुरा में तथा सुबाहु को विदिशा में शासक नियुक्त किया था।[49]

'कालिदास कृत' 'मेघदूतम्'[50] में प्राप्त ऐतिहासिक भूगोल से सम्बन्धित तथ्यों का ज्ञान यहाँ अपेक्षित है। कालिदास का सम्बन्ध उज्जयिनी से था। कालिदास के अनुसार उज्जयिनी स्वर्ग का एक कांतियुक्त खण्ड था जिसका उपभोग करने के निमित्त उत्कृष्ट आचरण वाले देवता अपने अवशिष्ट पुण्यों के प्रताप के कारण स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर उतर आये थे।[51]

कालिदास ने अवन्ति प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का सूक्ष्म वर्णन मेघदूत में किया है। भूमिखण्डों, नदियों और नगरों का वर्णन अत्यन्त सुन्दर श्लोकों में किया है। कालिदास उल्लेख करते हैं कि दशार्णों की जो राजधानी है वह विदिशा नाम से देश—देशान्तरों में प्रसिद्ध है और इसी श्लोक में वेत्रवती (बेतवा) नदी का भी नामोल्लेख है।[52] वहाँ एक टेकरी है (नीच = छोटागिरि) उसे नीच गिरि के नाम से जाना जाता है।[53] विन्ध्यपाद में प्रवाहमान रेवा नदी[54], निर्विन्ध्या नदी[55] का भी वर्णन मिलता है। उज्जयिनी नगर शिप्रा नदी के प्रातःकालीन कमलों की सुगंधि के भार से युक्त वायु के कारण सुवासित हो उठता था।[56] इस ग्रंथ का मेघ रामगिरि से विदिशा, उज्जयिनी एवं देवगिरि[57] होता हुआ चर्मण्वती[58] (चम्बल) को पार कर दशपुर[59] में पहुँचा। मेघदूत के पूर्वार्द्ध में कवि ने यक्ष मुख से मेघ को अलकापुरी के मार्ग का बोध कराते हुए जिन अनेकानेक भौगोलिक स्थलों का वर्णन किया, टीकाकारों ने उन स्थलों की विभिन्न रूप में विवेचना की है।[60]

कालिदास के वर्णन से प्रतीत होता है कि यहाँ पर शैव मतावलम्बी बहुसंख्या में रहते थे। उन्होंने नगर में विद्यमान चण्डीश्वर धाम का उल्लेख किया है जहाँ पर शिवभक्त रहा करते थे।[61] 'मेघदूत' में महाकाल की शोभा का वर्णन कर यक्ष मेघ से कहता है कि उज्जयिनी में तुम किसी समय पहुँचो, परन्तु सूर्य के अस्त होने तक तुम्हें वहाँ ठहरना होगा। प्रदोष—पूजा के अवसर पर तुम अपना स्निग्ध गम्भीर घोष करना जो

महाकाल की पूजा में नगाड़े का काम करेगा और तुम्हें अशेष पुण्यों का भाजन बनायेगा।[62] इतना ही नहीं कालिदास मंदिर में पूजार्थ नियत की गयी देवदासियों से परिचय रखते हैं। इस मंदिर में देवदासियाँ नाचती थीं जिनके पैरों की कंकिणी के शब्द से मंदिर गूँज उठता था। वे मंदिर में प्रतिमा के सामने रत्नजड़ित डाँडीदार चँवर डुलाती थी।[63]

'कालिदास' उज्जयिनी को विशाला नाम से सम्बोधित कर उसका वर्णन करते हुए मुग्ध हो जाते हैं।[64] उज्जयिनी उदयन एवं वासदत्ता के उदात्त प्रेम की क्रीड़ास्थली थी। इस नगर में प्रतापी सम्राट उदयन की कथा जानने वाले पंडित रहा करते थे।[65] उज्जयिनी की प्रसिद्धि सर्वप्रथम महाजनपद काल से प्रारम्भ हुई इस समय यहाँ पर अवन्ति के प्रद्योत वंश की राजधानी वर्तमान थी। गौतमबुद्ध के काल में यहाँ चण्डप्रद्योत राज्य कर रहा था, जिसकी महान शक्ति के कारण बहुत से समकालीन नरेश आतंकित थे। इस महत्वाकांशी नरेश की समस्त साम्राज्यवादी योजनायें इसी नगर में बनायी गयी थीं। उसने वत्सराज उदयन को यहीं पर बन्दी बनाया था। 'मेघदूत' में उदयन के द्वारा प्रद्योत की प्रिय दुहिता वासवदत्ता का उज्जयिनी से भगाने का भी उल्लेख किया है।[66] मेघदूत में उज्जयिनी के बाजारों का भी वर्णन मिलता है, जिसमें रत्न, शंखमणि, मयूख तथा बहुमूल्य वस्तुएँ विक्रय के निमित्त सजायी गयी थी।[67]

'मालविकाग्निमित्रम्'[68] निर्विवाद रूप से कालिदास की प्रथम नाटकीय रचना है।[69] यह रूपक पाँच अंकों का नाटक है जो सम्भवतः उज्जयिनी में बसंतोत्सव के समय खेला गया था। इससे प्रतीत होता है कि शुंगों के काल में विदिशा नगर का महत्वपूर्ण स्थान था। इसमें विदिशा से सम्बन्धित कतिपय शुंग कालीन घटनाओं के वर्णन उपलब्ध होते हैं। इस नाटक में विदिशा शासक अग्निमित्र तथा विदर्भ राजकन्या मालविका की प्रणय कथा का वर्णन मिलता है।[70] कालिदास के मेघदूत में उज्जयिनी का जो वर्णन किया गया है वह इस आधार पर इसी काल का सिद्ध होता है। इस प्रकार कालिदास की कृति कोमल कला की दृष्टि से ही नहीं अपितु आध्यात्मिकता की दृष्टि से भी उपादेय है, इसका मूल कारण यही है कि कालिदास भारतीय साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कलाकार ही नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति के भी मर्मज्ञ व्याख्याता हैं। वस्तुतः कालिदास कृत साहित्य में अनेकानेक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सामग्री प्राप्त होती है।

'कादम्बरी'[71] महाकवि बाण की अमरकृति है। इसके दो खण्ड हैं पूर्वभाग[72] तथा उत्तरभाग[73]। उत्तरार्द्ध उनके पुत्र पुलिन्द की रचना मानी जाती है। कथामुख प्रारम्भ के शूद्रक वर्णन[74] में विदिशा के राजा शूद्रक के प्रभाव तथा वैभव की सूचना मिलती है। 'मालव जनपद' की विलासिनी युवतियाँ उस 'वेत्रवती' की उर्मिमालाओं में स्नान करती थीं।[75] मालवों का निवास स्थान पहले पंजाब में था किन्तु धीरे–धीरे वे उत्तरी भारत राजपूताना मध्य भारत, उत्तर प्रदेश, लाट देश तक फैल गये और अंत में स्थिर रूप से वर्तमान मालवा में बस गये।[76] कथामुख प्रारम्भ के 'विन्ध्याटवी वर्णन'[77] में विन्ध्याचल के वनों का वर्णन है। अगस्तऋषि के आश्रम का वर्णन है।[78] वनों के बारे में कहा गया है कि, जो मध्यदेश की आभूषण स्वरूप मानों पृथ्वी की मेखला हो, जंगली हाथियों, फूलों, पक्षियों, शिखर प्रदेशों, लता वनस्पतियों[79] भीलों (जनजातियों)[80], सिंह, वृक्ष, जीव–जन्तु, वनस्पतियों का वर्णन है।[81]

पूर्वकथा प्रारम्भ के 'उज्जयिनी वर्णन'[82] में उल्लिखित है कि अवन्ति देश मे उज्जयिनी नामक नगरी है जो समस्त त्रिभुवन की अलंकार स्वरूपा मानों सत्ययुग की जन्मभूमि हो। तीनों लोकों के अधिपति 'महाकाल' इस नाम वाले भगवान (शंकर) द्वारा मानों अपने रहने के लिए दूसरी पृथ्वी बनाई हो।[83] बाणभट्ट ने उज्जयिनी का बहुत समृद्ध वर्णन प्रस्तुत किया है– जिसके शंख, सीप, मुक्ता, प्रवाल मरकट, मणियों के समूह युक्त तथा सोने के चूर्ण के कणों के समूह से व्याप्त लम्बे–चौड़े, बड़े–बड़े बाजारों से मार्ग सुशोभित होते हैं।[84]

'कादम्बरी' में उज्जयिनी स्थित मंदिरों, सुशोभित चौराहों, कुओं, जलघटी यंत्रों (रेहट), हरे–हरे बगीचों, तालों, सरोवरों[85] आदि का वर्णन है। अमृत के फेन के समान शुभ्र अटारियों, छज्जों से युक्त, शिप्रा नदी से घिरी हुई उज्जयिनी नगरी का वर्णन है। उज्जयिनी के लोग विलासप्रिय, यश वाले एवं बड़े–बड़े भवनों के निर्माता[86], उदार, एवं चतुर विद्वान हैं।[87]पर्वतों के समान ऊँचे प्रासाद, बड़े–बड़े भवनों के कारण शाखा नगरों[88], चित्रशाला युक्त दीवारों[89], संगीतों[90] से युक्त उज्जयिनी नगरी है।

'महाकालवर्णन'[91] में उल्लिखित है कि इस नगरी के महाकाल भगवान शिव कैलाश पर्वत की प्रीति छोड़कर स्वयं विराजते हैं। इस प्रकार कादम्बरी के वर्णन के आधार पर आलोच्यकालीन मालवा के राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक, कला एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रकाश डाला जा सकता है।

'दशकुमारचरित'[92] के रचयिता महाकवि 'दण्डी' (7वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) संस्कृत के सुप्रसिद्ध गद्य–काव्यकार हैं। 'अवन्तिसुन्दरीकथा'[93] इनकी एक महत्वपूर्ण कृति है, जिससे दण्डी के जीवनवृत्त के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। इसमें कादम्बरी की कथा का वर्णन है जिससे दण्डी बाणभट्ट के अनन्तर उत्पन्न हुए थे, यह तथ्य निश्चयेन प्रतीत होता है।[94] उस युग में उज्जयिनी एक महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र था, जहाँ बालक शिक्षण के निमित्त भेजे जाते थे।[95] विन्ध्यवन के पुराने खण्डहरों में एक ऐसे नगर का वर्णन है जहाँ धनपूर्ण कलशों में खजाने गड़े थे[96], उस धन को खोदकर, लादकर उज्जैनी ले जाने का उल्लेख है।[97] मालव नरेश मानसर द्वारा अपने पुत्र दर्पसार का उज्जयिनी में राज्याभिषेक का वर्णन है।[98] अवन्तिपुरी की उज्जैनी में अनंतकीर्ति नामक सौदागर की नितम्बवती नाम वाली रूपवती पत्नी को देखने शूरसेन देश के मथुरा नगरी का एक शूद्र गया।[99] 'दशकुमारचरित' के 'षष्ठोच्छवास' में अवन्ति नरेश एवं अवन्ति का उल्लेख हुआ है।[100] दशकुमारचरित् की 'उत्तरपीठिका' में

राजवाहन के उज्जयिनी जाने एवं मालव नरेश मानसार को पराजित कर मार डालने एवं उसकी पुत्री अवंतिसुन्दरी से प्रेम करने एवं मालव नरेश के राज्य पर अधिकार करने का उल्लेख है।[101]

निष्कर्ष

मालवा के ऐतिहासिक भूगोल के अध्ययन से सम्बद्ध साहित्यिक ग्रंथ धार्मिक एवं लौकिक हैं, जिनका ऐतिहासिक अध्ययन तत्कालीन भौगोलिक विस्तार एवं सांस्कृतिक प्रगति पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होता है। इनके पूरक सामग्री के रूप में आभिलेखिक साक्ष्यों की भी अपेक्षा है।

'मालवा' का नामकरण भी एक रोचक विषय है। दूसरी शताब्दी ई0 तक 'अवन्ति' कहा जाने वाला यह क्षेत्र सातवीं–आठवीं शताब्दी ई0 के पश्चात किस प्रकार से 'मालवा' कहा जाने लगा इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। अतः अधिकांश विद्वानों द्वारा यह स्वीकार किया गया कि मालवा का प्राचीन नाम अवन्ति था और उसकी राजधानी उज्जैन थी। इस प्रकार विदिशा से उज्जयिनी तक मालवा जनपद का विस्तार था।

वैदिक काल से लेकर 7वीं–8वीं शताब्दी तक के संस्कृत साहित्यों मे उल्लिखित मालवा के ऐतिहासिक भूगोल एवं संस्कृति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। स्कन्दपुराण के 'अवन्ति–खण्ड' और 'ब्रह्मपुराण' में उज्जयिनी का सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण नगरी के रूप में चित्रण हुआ है। कालिदास के मेघदूत में उज्जयिनी और महाकाल के साथ यहाँ की पवित्र नदी 'शिप्रा' के अतिरिक्त मालवा भूमि पर विराजमान अनेक देवालय, तीर्थस्थान एवं ऐतिहासिक प्रासाद, नदियाँ, पर्वत, घने जंगल आदि अनेकानेक जिन भौगोलिक स्थलों का वर्णन किया है उन स्थलों की विभिन्न रूपों में विवेचना की गई है। इस प्रकार कालिदास की यह उक्ति कि ''उज्जयिनी स्वर्ग का एक कांतियुक्त खण्ड था जिसका उपभोग करने के निमित्त उत्कृष्ट आचरण वाले देवता अपने अवशिष्ट पुण्यों के प्रताप के कारण स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर उतर आये थे'' चरितार्थ होती है।

संदर्भ सूची

1. जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1897, पृ0 30.
2. सरकार, डी0सी0, एंसियेंट मालवा एण्ड द विक्रमादित्य ट्रेडीशन, दिल्ली 1979, पृ0 12.
3. डेविट्स, रीज, बुद्धिस्ट इण्डिया, लन्दन, 1902, पृ0 28.
4. अग्रवाल, वासुदेव शरण, कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन, चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, 1970, पृ0 24.
5. डे,नन्दलाल, ज्यॉग्राफिकल डिक्शनरी ऑफ एंशिएण्ट एण्ड मेडिवल इंडिया, लंदन, 1927, पृ0 122.
6. जैन, के0सी0, 'मालवा थ्रू द एजेज', मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1972, पृष्ठ–87.
7. रामायण, सं0–टी0आर0 कृष्णाचार्य, प्रकाशक– निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1905, उत्तरकाण्ड, अध्याय 121.
8. महाभारत, सं0–सुक्थांकर, भण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना 1927–53.
9. महाभारत, सं0–सुक्थांकर, भण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना आदिपर्व, 113, 44, 49.
10. पार्जिटर, एफ0आई0, 'एंशिऐंट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन', लंदन, 1922, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1992.
11. भागवत पुराण, सं0–वी0एल0 पंसिकर, मुम्बई 1920 एवं एम0एन0 दत्त, कलकत्ता, 1895, 9–7 और 1–3.
    भागवत पुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि0स0 2011.
    उपाध्याय, बलदेव, भागवत सम्प्रदाय, प्रकाशक –काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं0 2013.
12. पार्जिटर, एफ0, 'एंशिऐंट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडीशन' लंदन, 1922, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1992.
    पार्जिटर, एफ0ई0, 'दि पुराण टेक्स्ट ऑफ द डायनेस्टीज ऑफ द कलि एज', चौखम्बा, संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1962.
13. वायुपुराण, सं0–राजेन्द्र लाल मिश्र, कलकत्ता, 1888 एवं आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, 1905, 45–48.
    पराचर्मण्वती चैव विदिशा वेत्रवत्यपि।
    शिप्रा दमवन्ती च तथा पारियात्राश्रयाः स्मृताः।।
14. ब्रह्माण्डपुराण, श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1906, IV, 2, 16, 28.
    वर्णाशानन्दना चैव सदानीरा महानदी।
    पशा चर्मण्वतीनूपा विदिशा वेत्रक्त्यपि।।
15. विष्णुपुराण, बम्बई, 1989.
16. अग्निपुराण, सम्पादक–आर0 मित्रा, बी0आई0, कलकत्ता, 1873–89, अध्याय 275.
17. भागवत पुराण, सम्पादक–बी0एल0 पंसिकर मुम्बई, 1920, X 58, 30–31.
18. मत्स्य पुराण, सं0–हरिनारायण आप्टे, प्रकाशक– आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, 1907.
19. जैन, के0सी0, मालवा थ्रू द एजेज, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1972, पृष्ठ–298.
20. स्कन्दपुराण (हिन्दी), गीता प्रेस, गोरखपुर.
    स्कन्दपुराण, सं0–जी0पी0 रावरकर, मुम्बई, 1909–11.
    अवस्थी, ए0बी0एल0, स्कन्दपुराण–ए स्टडी, लखनऊ, 1966, भाग–1–2.
21. लॉ, बी0सी0, इण्डोलॉजिकल स्टडीज, भाग–3, गंगानाथ झा, रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद, 1954, पृष्ठ–1510.
22. स्कन्दपुराण, जी0पी0 रावरकर, बम्बई, 1909–11, (अवन्तिखण्ड LXVI, 27)

–स्कन्दपुराण, सम्पादक, पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक–संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली, 1972, द्वितीय खण्ड पृ0 167–336(अवन्ति खण्ड).

23. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41.
24. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41, पंक्ति 51.
25. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41, पंक्ति 59.
26. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41, पंक्ति 59.
27. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41, पंक्ति 65.
28. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 40, पंक्ति 67–70.
29. ब्रह्मपुराण, सं0–क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, 1906, अध्याय 41, पंक्ति 75–76.
आस्ते तत्र नदी शिप्रा पुण्यानामेति विश्रुता।
तस्यां स्नातस्तु विधिवत् सन्तर्प्यपितृदेवताः।।
सर्वपापविनिर्मुक्ताः विमानवरमास्थिताः।
मुक्तः विविधान्भोगान्स्वर्गलोके नरोत्तमः।।
30. गरुड़पुराण, क्षेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई 1906, अध्याय–7.
शोभाढ्यम, नानारत्न समाकुलम, नानाजनपदाकीर्णम,
नानाधर्मसमन्वितम्, सर्वसम्पत्समन्वितम्।
31. मार्कण्डेयपुराण, क्षेमराज श्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 47, 21–24.
32. सुत्तनिपात संपादित–डी एडरसन एण्ड एच स्मिथ, पी0टी0एस0 लन्दन, 1913 सुत्तनिपात के अनुसार, गोनर्द उज्जैन और बेसनगर के मध्य स्थित था।
33. महाभाष्य– पतंजलि कृत, सं0 कीलर्हान बी0वी0एस0 1906, एफ0एफ0.
– महाभाष्यम्, पतंजलि कृत, सं0–युधिष्ठिर मीमांसक, प्रकाशक–श्री प्यारे लाल द्राक्षादेवी न्यास, दिल्ली, 1979.
34. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल, 'पतंजलिकालीन भारत', प्रकाशक–ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2007, पृ0 101.
35. मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास कृत, सं0–रमाशंकर पाण्डेय, प्रकाशक–चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1979.
– महाकवि कालिदास ने मालिविकाग्निमित्रम् नामक नाटक की प्रस्तावना में भास की प्रशंसा की है (पूर्वरंग)
36. भासनाटकचक्रम्, संपादक–सुधाकर मालवीय, प्रकाशक–चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, भाग–द्वितीय.
– पुसालकर ए0डी0, भास : ए स्टडी : मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, दूसरा संस्करण, 1968.
– तुलनात्मक अध्ययन के लिए देखिए, बर्नेट, जे0आर0ए0एस0 1919, पृष्ठ 233–34.
37. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, महाकवि भास कृत, सं0–पं0 वैद्यनाथ झा, प्रकाशक–चौखम्बा सरस्वती भवन, वाराणसी, 1981, कृष्णदास संस्कृत सीरीज–7.
38. स्वप्ननासवदत्तम्, महाकवि भास कृत, सं0–बालगोविन्द झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2009, कृष्णदास संस्कृत सीरीज–45.
39. चारुदत्तम्, महाकवि भास कृत, सं0–परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, 1995, कृष्णदास संस्कृत सीरीज–88.
40. रीडर, ए0डब्ल्यू0, 'मृच्छकटिक ऑफ शूद्रक', कैम्ब्रिज, मास, 1905.
–मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत, सं0–डॉ0 गंगासागर राय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, ग्रंथमाला–14, वि0सं0 2067.
–मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत, सं0–रामानुज ओझा, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, 1985, हरिदास संस्कृत ग्रंथमाला–252.
–मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत, सं0–डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री, प्रकाशक–साहित्य भण्डार मेरठ, चतुर्थ संस्करण, 1980.
–कीथ, ए0बी0– 'संस्कृत नाटक', मोतीलाल बनारसीदास, 1987.
41. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–प्रथम, पृ0–1.
42. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–नवम्, पृ0–493, 92–96, 57–8, 549.
43. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–प्रथम, पृ0–4–5.
44. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–प्रथम, पृ0–407–491.
45. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–प्रथम, पृ0–10–16.
46. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–गंगासागर राय, प्रकाशक–चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, वि0सं0 2067, अंक–प्रथम, पृ0–4.
47. मृच्छकटिकम्, शूद्रक कृत सं0–श्रीरामानुज ओझा, प्रकाशक–चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, 1985, हरिदास संस्कत ग्रंथमाला–252, अंक–चतुर्थ, पृ0–230, 232, 239.
48. 'कालिदास ग्रंथावली', सं0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, प्रकाशक– कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी तृतीय संस्करण 2008. (खण्ड–1–2).
49. 'कालिदास ग्रंथावली', सं0–रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1986. रघुवंश, सर्ग–15, श्लोक 36, पृ0–280.

–रघुवंश महाकाव्य, कालिदास कृत, सं0–पं0 हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, वाराणसी, 1953. सर्ग–15, श्लोक 36.
–रघुवंश महाकाव्य, कालिदास कृत, सं0–पं0 श्री रामचन्द्र मिश्र, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1979. पृ0 108.

50. मेघदूत, सं0–ई0 हुल्श, लन्दन, 1011.
–कीथ, ए0बी0, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' (अनु0) मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1960.
–'कालिदास ग्रंथावली', संपादक–ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक–चौखम्बा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012.
51. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 30, पृ0 436.
52. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 24, पृ0 434.
53. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 25, पृ0 434.
54. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 19, पृ0 433.
55. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 28, पृ0 435.
56. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 31, पृ0 436.
57. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 42,45, पृ0440, 441.
58. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 45, पृ0 441.
59. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 47, पृ0 442.
60. जिन्दल, कुमकुम, मेघदूत : टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन, नाग पब्लिकेशन दिल्ली, 1994, पृ0 146–168.
61. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 33, पृ0 437.
62. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 34, पृ0 437.
63. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 35, पृ0 438.
64. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 30, पृ0 436.
'पूर्वोदिष्टामनुसरपुरींश्रीविशालांविशालाम्'
65. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत पृ0 436.
'प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविद–ग्राम–वृद्धान्'
66. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत पृ0 436.
67. 'कालिदास ग्रंथावली', सम्पादक–डॉ0 मिथिला प्रसाद त्रिपाठी एवं रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक–कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जयिनी, 2008. प्रथम भाग, पूर्वमेघदूत श्लोक 33, पृ0 437.
68. मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास कृत, संपादक–एफ बॉलेन सेन, लिपजिंग, 1979.
– मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास कृत, संपादक–रमाशंकर पाण्डेय, प्रकाशक–चौखम्बा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1979.
69. कीथ, ए0बी0, 'संस्कृत नाटक', मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1987, पृ0 146.
70. मालविकाग्निमित्रम्, संपादक–एफ बालेनसेन, लिपजिंग 1879, अंक–V
– कीथ,ए0बी0, 'संस्कृत नाटक', मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1987, पृ0 147–48.
71. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–मथुरानाथ शास्त्री, प्रकाशक– निर्णय सागर यन्त्रणालय, बम्बई, 1948.
– कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–एम0आर0 काले, बम्बई.
– कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–मथुरानाथ पाण्डुरंग परब, प्रकाशक–निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1932.
– कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–पी0 पीटरसन, बम्बई, 1900.
72. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, पूर्वभाग, टीकाकार मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1977.

73. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, उत्तरभाग, टीकाकार मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1977.
74. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज–127, प्रकाशन वाराणसी, 1993.
75. अग्रवाल, वासुदेवशरण, 'कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन', चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1970, पृ0 24–25.
76. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल, 'पतंजलि कालीन भारत', ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2007, पृ0 79.
77. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 88.
78. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 98.
79. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 89.
80. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 90.
81. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 89–97.
82. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 241.
83. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 242.
84. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 243.
85. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 244–246.
86. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 248.
87. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 251.
88. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 253.
– शिल्परत्न, सं0– गणपतिशास्त्री, प्रकाशक– गवर्नमेंट प्रेस त्रिवेन्द्रम 1022,अध्याय–5. (नगरोपान्ते)
89. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–मथुरानाथ शास्त्री, प्रकाशक–निर्णय सागर यंत्रणालय, बम्बई, 1948, पृ0 102.
'सुरासुरसिद्धगन्धर्वविद्याधरोगाध्यासिताभिश्चित्रशलाभि
90. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 258.
91. कादम्बरी, बाणभट्ट कृत, सं0–जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास संस्कृत सीरीज 127, 1993, पूर्वार्द्ध, पृ0 265.
92. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–जी0 ब्यूलर और पी0 पीटरसन, बाम्बे संस्कृत सीरीज, 1887–91.
– दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास.
93. अवन्तिसुन्दरीकथा, दण्डी कृत, सं0–एम0आर0 कवि, मद्रास, 1924.
– अवन्तिसुन्दरीकथा, दण्डी कृत, सं0–जी0 हरिहर शास्त्री, मद्रास, 1957.
94. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', शारदा निकेतन, वाराणसी, 1985.
95. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास. पंचमोच्छ्वास, पृ0 159.
96. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, पृ0 85.
97. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, पृ0 86.
98. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, पृ0 90.
99. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, षष्ठोच्छ्वास, पृ0 203–4.
100. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, षष्ठोच्छ्वास, पृ0 185.
101. दशकुमारचरित, दण्डी कृत, सं0–सुबोध चन्द्र पंत, मोतीलाल बनारसीदास, उत्तरपीठिका, पृ0 295.